Conservation of water, forest and land must for natural balance: Minister Patel

Two-day workshop on subject ‘Water, Forest and Land’ begins at WALMI

MINISTER for Panchayat and Rural Development Kamleshwar Patel said that conservation of water, forest and land is necessary to prevent the deteriorating natural balance. This is possible through community participation. Patel was speaking at the two-day workshop on ‘Re-Generating Natural Capital Land, Water and Forest’ organised under the joint aegis of MP Water and Land Management Institute, Club of Rome International and Rajiv Gandhi Foundation.

Minister for Urban Development and Housing Jaivardhan Singh addressing a two-day workshop on ‘Re-Generating Natural Capital Land, Water and Forest’ organised under the joint aegis of MP Water and Land Management Institute, Club of Rome International and Rajiv Gandhi Foundation.

Minister Patel said that in the race for development, natural resources have been exploited indiscriminately in developed and developing countries including India. As a result, the existence of water, forest and land given by the nature has been endangered. He said that if we do not become conscious, the consequences will be dangerous. For this, the society should also come forward, he added. Water, forest and land are synonymous with each other: Minister for Public Relations P C Sharma said that water, forest and land, all three are synonymous with each other. Conformity among the three is

(Contd on page 2)
वाल्मी के जल, जंगल, जमीन विषय पर दो दिवसीय वर्कशॉप

ग्रामीण विकास मंत्री ने कहा
प्राकृतिक संतुलन के लिए जल
जंगल, जमीन का संरक्षण जरूरी

पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री
कमलेश पटेल ने कहा है कि
बिगड़ते हुए प्राकृतिक संतुलन को
संबाहने के लिये जल, जंगल,
जमीन का संरक्षण आवश्यक है। यह
समस्त भारतीय से संबंध है।

जल, जंगल और जमीन
एक-दूसरे के पर्याय

जनसंख्यक अंग्रेजी शर्मा ने कहा कि
जल, जंगल, जमीन एक-दूसरे के
पर्याय हैं। पर्यावरण संतुलन के लिए
शांतिक जरूर है। पूर्व प्रधानमंत्री
स्त. इंदिरा गांधी के लिए तो यह बिहार
भुआ है, हमें तो संदेह नहीं।
माप्र जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान (वाल्मी) में दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ
जल, जंगल और जमीन बचाने हुआ विर्मार्ग

उदाहरण सिद्धांत

माप्र जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान (वाल्मी) की ओर कव का रोप देशस्तरीय संस्था एवं गाँवी गांवी परिवेशक के
संयुक्त सम्बंध में जल, जंगल और जमीन की लेखनी प्रभावी नीतियों के सिद्धांत के संकेत में देश सीमा राष्ट्रीय जल और जमीन
कार्यशाला का शुभारंभ

आगामी साल में विभिन्न क्षेत्रों के महत्त्वता वाली मामलों का भी विशेष हित है। इस कार्यशाला का उद्देश्य है जल, जंगल और जमीन के भीतरी
निर्माण के साथ-साथ विभिन्न पक्षों के भीतरी प्रभावी नीतियों के सिद्धांत के संकेत में देश सीमा राष्ट्रीय जल और जमीन
कार्यशाला का शुभारंभ

कार्यशाला की उद्देश्यता है: जल, जंगल और जमीन के भीतरी प्रभावी नीतियों के सिद्धांत के संकेत में देश सीमा राष्ट्रीय जल और जमीन
कार्यशाला का शुभारंभ

कार्यशाला की उद्देश्यता है: जल, जंगल और जमीन के भीतरी प्रभावी नीतियों के सिद्धांत के संकेत में देश सीमा राष्ट्रीय जल और जमीन
कार्यशाला का शुभारंभ

कार्यशाला की उद्देश्यता है: जल, जंगल और जमीन के भीतरी प्रभावी नीतियों के सिद्धांत के संकेत में देश सीमा राष्ट्रीय जल और जमीन
कार्यशाला का शुभारंभ

कार्यशाला की उद्देश्यता है: जल, जंगल और जमीन के भीतरी प्रभावी नीतियों के सिद्धांत के संकेत में देश सीमा राष्ट्रीय जल और जमीन
कार्यशाला का शुभारंभ
जल-जंगल-जमीन के संरक्षण के लिए समाज भी आए आगे

कई समारोहों पर हुआ
विचार-विमर्श

भारत की स्थिति अन्य
देशों से बेहतर

पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री कमलेश्वर पटेल ने कहा कि जल, जंगल, जमीन की संरक्षण के लिए समाज भी आए आगे।
जल, जंगल, जमीन का संरक्षण आवश्यक : पटेल

लेफ्ट, वाटर एंड फोरेस्ट’ पर अमोजित दो दिवसीय कार्यशाला में कहा। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि भारत सहित अन्य विकासित और विकासशील देशों में विकास की दौड़ में प्राकृतिक संसाधनों का अधिकृत दौरान किया गया है। इसका परिणाम है कि प्रकृति इस निश्चुक प्रदत्त जल, जंगल, जमीन का अस्तित्व ही खारे में आ गया है। उन्होंने कहा कि अगर अभी सभी हम सही चेत तो परिणाम भवावच होगी। इसके लिए सामाजिक को भी आगे आना चाहिए।

जनसेवक मंत्री पीयूष राम्मा ने कहा है कि जल, जंगल, जमीन तीनों एक-दूसरे के पर्यावरण सतततृता के लिये तीनों में सामाजिक जुड़ती है। उन्होंने बताया कि पूर्व प्रशासनीय स्थान, इंदिरा गांधी ने भोपाल प्रवास के दौरान कहा था कि भोपाल बहुत सूर्य राह है, इसे और सुदर बनाने की आवश्यकता है। भोपाल राह के मध्य सिमट तालाब, पहाड़ी, जंगल प्राकृतिक सौंदर्य को दूर-गुना करता है।

भू-जल पर निरंतर कम करने की जरूरत

नगरीय विकास एवं आवास मंत्री जयवर्धन सिंह ने कहा था कि गल बीं में भू-जल के बिना सोच-समझने देने ने गांव स्थिति निर्मित कर दी है। उन्होंने कहा कि पेयजल के लिए भू-जल पर निरंतर कम करने का प्रयास किया जा रहा है।